भारत में राजनीतिक शरण ली । इसके पश्चात् एक बड़ी संख्या में तिब्बती शरणार्थी भारत आये । इन सबको मसूरी के पास बसा दिया गया । चीन की सरकार ने इसे शत्रुतापूर्ण कार्य बताया । वस्तुत: इसी समय से भारत और चीन के सम्बन्ध कुछ कुछ बिगड़ना प्रारम्भ हो गये ।

**भारत-चीन सीमा-विवाद**— इधर दूसरी तरफ भारत और चीन के मध्य सीमा को लेकर कटु विवाद प्रारम्भ हो चुका था । 1950-51 में साम्यवादी चीन के नक्शे में भारत के एक बड़े भाग को चीन का अंग दिखाया गया था । जब भारत सरकार ने चीन का ध्यान इस ओर दिलाया तो यह कहकर मामला टाल दिया गया कि ये नक्शे कोमिन्तांग सरकार के पुराने नक्शे है । चीन की नयी सरकार को इतना समय नहीं मिला है कि वह इनमें उपयुक्त संशोधन कर सके । समय मिलते ही इन नक्शों को ठीक कर दिया जायगा । जून 1954 में भारत एवं चीन के मध्य तिब्बत को लेकर समझौता हुआ तब वार्ता हेतु चुने गये विषयों में सीमा-विवाद का कहीं प्रश्न ही न था । भारत में यही समझा गया कि समस्त विवाद हल हो चुके है । परन्तु शीघ्र ही 17 जुलाई, 1954 को चीन ने एक पत्र द्वारा भारत पर आरोप लगाया कि भारतीय सेना ने बूजे नामक चीनी स्थान पर अवैध अधिकार कर लिया है । बूजे भारत में बड़ी होती के नाम से प्रसिद्ध था । चीन के विरोध-पत्र का उत्तर देते हुए भारत सरकार ने लिख दिया कि "यह स्थान भारतीय प्रदेश में है और यहाँ भारतीय सीमा सुरक्षा सेना की चौकी है ।" 1954 से ही चीन ने सीमा के विभिन्न भारतीय प्रदेशों में अपने सैनिक दस्ते और टुकड़ियाँ भेजनी आरम्भ की । 23 जनवरी, 1959 के पत्र में चीनी सरकार ने लिखा कि भारत और चीन के मध्य कभी भी सीमाओं का निर्धारण नहीं हुआ है और तथाकथित सीमाएं चीन के विरुद्ध किये गये साम्राज्यवादी षड्यन्त्र का परिणाम मात्र है ।

**भारत पर चीन का आक्रमण**— अक्टूबर 1962 में भारत पर साम्यवादी चीन ने बड़े पैमाने पर आक्रमण कर दिया । इससे पूर्व 12 जुलाई, 1962 को लद्दाख में गलवान नदी की घाटी की भारतीय चौकी को चीनियों ने अपने घेरे में लिया । 8 सितम्बर को चीनी सेनाओं ने मेकमहोन रेखा पार करके भारतीय सीमा में प्रवेश किया । 20 अक्टूबर, 1962 को चीनी सेनाओं ने उत्तर-पूर्वी सीमान्त तथा लद्दाख के मोर्चे पर एक साथ बड़े पैमाने पर आक्रमण किया । टिड्डी दल की भाँति वे भारतीय चौकियों पर टूट पड़े । 21 नवम्बर, 1962 को चीन ने एकाएक अपनी ओर से एकपक्षीय युद्ध-विराम की घोषणा कर दी और युद्ध समाप्त हो गया । चीन ने जीते हुए भारतीय प्रदेशों को भी खाली करना प्रारम्भ कर दिया और भारत के कुछ सैनिक साजो-सामान को भी वापस कर दिया ।

**चीन द्वारा भारत पर आक्रमण के कारण— डॉ. बी. पी. दत्त** के अनुसार चीन के भारत पर आक्रमण के दो उद्देश्य थे—(i) अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना; (ii) भारत की निर्बलता को प्रदर्शित करना तथा (iii) उसे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपमानित करना ।

संक्षेप में, चीन द्वारा भारत पर आक्रमण के निम्नलिखित कारण थे—

(1) चीन विस्तारवाद की नीति का प्रदर्शन करना चाहता था ।

(2) चीन की इच्छा थी कि वह भारत को लोकतन्त्रात्मक पद्धति से उन्नति करने में सफल न होने दे, उस पर युद्ध का बोझ डाल दे ।

(3) तिब्बत के प्रति भारतीय नीति से चीन नाराज था । दलाईलामा को शरण देने के कारण उसे हमसे रोष था ।

(4) उसका उद्देश्य भारत को बदनाम करना था, एशिया में चीन को सर्वोच्च शक्ति बनने की आकांक्षा तथा भारत को नीचा दिखाने की इच्छा थी ।

"भारत पर चीन का आक्रमण बड़े सुविचारित और क्रूर विचारों से किया गया, इसके निम्न उद्देश्य —हिमालय में पीकिंग की शक्ति और अधिकार को स्थापित करना, भारत की प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचाना, हरू को नीचा दिखाना, चीन को एशिया में बड़ी वास्तविक शक्ति सिद्ध करना, चीनी भाइयों के स्थान पर हरू के नेतृत्व में भारतीय प्रतिक्रियावादियों को सहायता देने वाले खुश्चेव को पाठ पढ़ाना और संसार की क्तियों को यह सूचना देना कि दुनिया में तब तक शान्ति नहीं रह सकती, जब तक कि चीन को महाशक्ति के में स्वीकार न किया जाये और उससे ऐसा व्यवहार न हो ।"

चीन को यह आशा थी कि युद्ध की स्थिति में रूसी साम्यवादी भाई उसका साथ देगा और भारत में आन्तरिक होंगे । परन्तु चीन की ये कामनाएँ सफल नहीं हो सकीं । अमरीका, ब्रिटेन और उसके बाद फ्रान्स पश्चिमी

Scanned by CamScanner

जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा ने तेजी से भारत को सैनिक सहायता दी; सोवियत संघ प्रायः तटस्थ रहा और उसने चीन पर युद्ध बन्द करने को दबाव डाला। मिस्र, यूगोस्लाविया और घाना जैसे गुटनिरपेक्ष राज्यों का दृष्टिकोण बड़ा ही निराशाजनक रहा। आक्रमण की निन्दा करना तो दूर उन्होंने आक्रमण के समय चुप्पी ली। पाकिस्तान ने चीनी आक्रमण का लाभ उठाते हुए भारत की निन्दा करना शुरू कर दिया। पाकिस्तान ने चीनी आक्रमण को 'सामान्य स्थानीय मामले' का रूप देने का प्रयास किया।

**चीन के एक-पक्षीय युद्ध-विराम के कारण**—चीन ने एक-पक्षीय युद्ध-विराम की घोषणा करके सबको स्तब्ध कर दिया। युद्ध बन्द कर देने के कारणों के सम्बन्ध में बड़ा मतभेद है। फिर भी मोटे तौर से निम्नलिखित कारण हो सकते हैं—

(1) चीन अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपनी सद्भावना प्रकट करना चाहता था कि चीन युद्ध प्रेमी नहीं बल्कि उसे बाध्य होकर लड़ाई लड़नी पड़ी थी।

(2) चीन को अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलता मिल गयी थी। सैनिक दृष्टि से चीन ने भारत को हराकर भारतीय प्रतिष्ठा को धूल में मिला दिया और भारत की निर्बलता जग-प्रसिद्ध हो गयी थी।

(3) सर्दी बढ़ जाने से सैनिकों को सामान पहुँचाने के लम्बे मार्ग पार करना कठिन होता जा रहा था, जिससे चीन अधिक समय तक युद्ध जारी नहीं रख सकता था।

(4) भारत को अमरीका और ब्रिटेन से भारी मात्रा में सैनिक सहायता तेजी से प्राप्त होने लगी थी।

(5) सोवियत संघ चीन के इस आक्रमण को उचित नहीं समझता था।

(6) चीन इस तथ्य से परिचित था कि भारत पर प्रभुत्व जमाना आसान नहीं है। वह केवल अपनी शक्ति प्रदर्शित करके एशिया में अपने नेतृत्व का दावा प्रमाणित करना चाहता था।

**भारत की पराजय के कारण**—इस युद्ध में भारत की पराजय के निम्नलिखित कारण हैं—(1) भौगोलिक स्थिति चीन के पक्ष में थी। चीनी, तिब्बत के ऊँचे पठार तथा चोटियों से आक्रमण करते थे जबकि भारतीयों को निचली घाटियों से हिमालय की ऊँची चोटियों तक चढ़कर अपने मोर्चों की रक्षा करने का कठिन काम करना पड़ा। (2) चीनियों ने इस युद्ध की तैयारी बहुत समय पूर्व से कर रखी थी जबकि भारत इसके लिए तैयार ही न था।

**कोलम्बो प्रस्ताव**—भारत और चीन के इस युद्ध से एशिया और अफ्रीका के कुछ मित्र-राज्यों ने दोनों देशों के सीमा-विवाद को हल करवाना चाहा। इन देशों ने श्रीलंका की राजधानी कोलम्बो में 10 दिसम्बर से 12 दिसम्बर, 1962 तक एक सम्मेलन किया। इस सम्मेलन में बर्मा, कम्बोडिया, श्रीलंका, घाना, इण्डोनेशिया तथा संयुक्त अरब गणराज्य के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत ने इन प्रस्तावों के बारे में कोई स्पष्ट प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की। कोलम्बो प्रस्ताव के पाँच सूत्र इस प्रकार हैं—

(1) वर्तमान नियन्त्रण रेखा भारत-चीन विवाद के समाधान का आधार मानी जाय।

(2) **अ**—पश्चिमी क्षेत्र में चीन वर्तमान रेखा से 20 किलोमीटर पीछे अपनी सैनिक चौकियाँ हटा ले, जैसा कि चाऊ-एन-लाई स्वयं श्री नेहरू को अपने 21 तथा 23 नवम्बर के पत्र में लिख चुके हैं। **ब**—भारत इस क्षेत्र में अपनी वर्तमान स्थिति को बनाये रखे। **स**—समस्या के अन्तिम समाधान होने तक भारत और चीन इस क्षेत्र को विसैन्यीकृत रखें और इस क्षेत्र का निरीक्षण दोनों देशों के असैनिक अधिकारी करें।

(3) पूर्वी क्षेत्र में वर्तमान नियन्त्रण रेखा को युद्ध-विराम रेखा माना जाय।

(4) मध्य क्षेत्र में सीमा का निश्चय शान्तिपूर्ण साधनों से किया जाय।

(5) इन प्रस्तावों की स्वीकृति से दोनों देशों के बीच परस्पर वार्ता के द्वारा निर्णय ले सकते हैं।

**चीन-पाकिस्तान सम्बन्ध**—1962 के भारत-चीन युद्ध का जो भी परिणाम समक्ष आया उसने सबसे महत्वपूर्ण चीन और पाकिस्तान का सम्बन्ध रहा। पाकिस्तान ने भारत के अव्वल दर्जे के शत्रु की हैसियत से चीन से हाथ मिलाया और उसने कराकोरम क्षेत्र में चीन को स्थायी रूप से बसा दिया। पाकिस्तान ने एक अधिकृत कश्मीर का लगभग 2,600 वर्ग मील का भू-भाग चीन को सौंप दिया। इसके बाद से चीन और पाकिस्तान की दोस्ती बहुत ही प्रगाढ़ हो गयी। चीन ने पाकिस्तान को सैनिक सहायता दी। चीन के आणविक वैज्ञानिक

Scanned by CamScanner